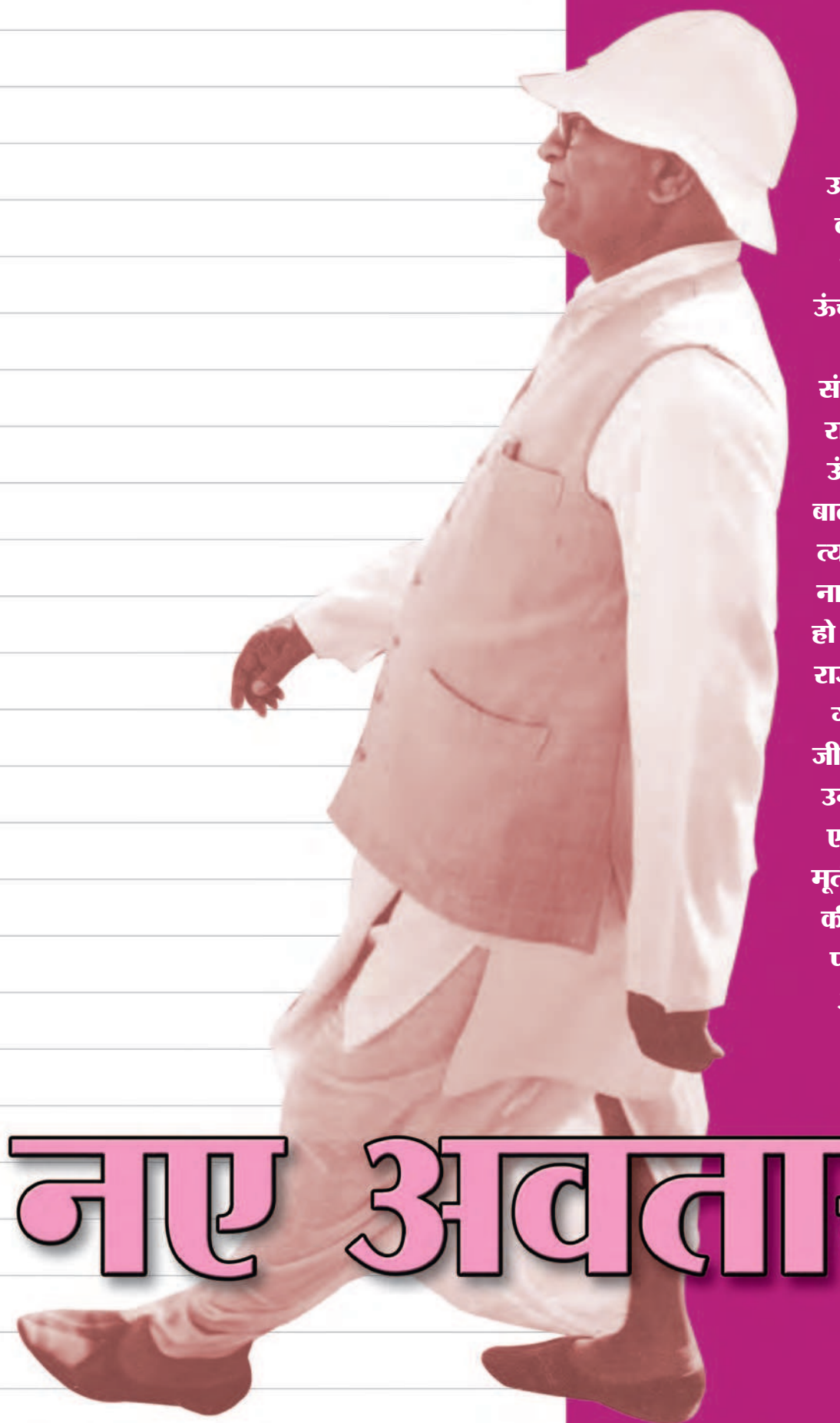


नाए अवतार में नानाजी



उच्चतम स्थान को रिक्त करने के बाद शून्य से प्रारंभ कर फिर उसी ऊंचाई पर पहुंचने के लिए आवश्यकता होती है संकल्प की, तपस्या की। राजनीतिक क्षेत्र की उन ऊंचाइयों पर पहुंचने के बाद उन्हें एक ही झटके में त्याग देने का माहा सिर्फ नानाजी जैसे व्यक्ति में ही हो सकता था। सत्ताकेंद्रित राजनीति से समाजकेंद्रित गतिविधियों को अपने जीवन का उद्देश्य बना कर उन्होंने दीनदयाल जी के एकात्म मानवदर्शन को मूर्त रूप देने के लिए जेपी की समग्र क्रांति की राह पकड़ ली थी। एक नए अवतार में आ गए थे नानाजी

